भारत की प्राचीन परंपराओं में जीवंतता है: एचएस पांडेय

कुंभ के महत्व, उत्पत्ति और इतिहास विषय पर व्याख्यान का आयोजन

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शखा एवं रांची विवि के तत्वावधान में 19 फरवरी को शहीद स्मृति सभागार, केंद्रीय पुस्तकालय रांची विवि रांची में अपराह्न तीन बजे 'कुंभ के महत्व, उत्पत्ति और इतिहास' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रो.एचएस.पांडे, प्रख्यात विद्वान एवं इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष,रांची विवि सत्र के वक्ता थे। व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो.बीएन.झा, बिदित, शिक्षाविद्व और पूर्व प्राचार्य, एसपी.कॉलेज दुमका ने किया। प्रारंभ में प्रो.पांडे और प्रो.झा को डा.अजय कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय निदेशक आईजीएनसीए, आरसीआर द्वारा सम्मानित किया गया। डा.मिश्रा ने अपने भाषण में व्याख्यान के अध्यक्ष, वक्ता, प्रतिष्ठित मेहमानों और उन सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया जो व्याख्यान का हिस्सा थे। उन्होंने संक्षेप में कुंभ मेले को आस्था का एक व्यापक हिंदु तीर्थ होने के बारे में बताया जिसमें हिंदु पवित्र नही में स्नान

करने के लिए एकत्रित होते हैं। अनुमानित 120 मिलियन लोग हर साल कुंभ का दौरा करते हैं। डा. मिश्रा ने अध्यक्ष प्रो.बीएन.झा बिदित और अध्यक्ष प्रो.एचएस.पांडे का परिचय दिया। प्रो.हरी शंकर पांडेय, पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, रांची विवि रांची में कार्यरत रह चुके हैं, प्रो.पांडेय इतिहास के प्रख्यात विद्वान है और इस क्षेत्र में जानी-मानी हस्ती हैं। प्रो.पांडेय केवल झारखंड में ही नही बल्कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों के ऐतिहा. सिक धरोहर के बारे में अध्ययन किया है और उसके बारे में शोध के माध्यम से विभिन्न प्रतियों में प्रकाशित किया है। व्याख्यान सत्र में प्रो.पांडेय ने महाकुंभ की उत्पत्ति, महत्व और इतिहास के बारे में प्रतिभागियों को गहनता से शिक्षित किया। उन्होंने जानकारी दी कि भारत अपनी अति प्राचीन परंपराओं को भी जीवंत रूप से इस कारण दे सका क्योंकि उसमें विस्वसनीयता है, वैज्ञानिकता है, वैदिक एवं पौराणिक कथाओं का व्यापक समर्थन एवं अनन्त फल ही प्राप्ति का संदेश है। पूर्ण कुंभ, अर्ध कुंभ, महाकुंभ इन शब्दों से भारतीय जनता वैदिक काल से अवगत रही है। कलश का ही पर्यायवाची शब्द कुंभ हैं। अमृत कलश की जगह अमृत कुंभ समाज में अत्यधिक प्रचलित रहा होगा इसलिए कुंभ महापर्व की अवधारणा आज भी यथावत है। परंपरागत रूप से चार मेलों को व्यापक रूप से कुंभ मेलों के रूप में पहचाना जाता है। प्रयागराज कुंभ मेला, हरिद्वार कुंभ मेला, नासिक-त्र्यंबकेश्वर सिंहस्थ और उज्जैन सिंहस्थ। इन चार मेलों को समय-समय पर निम्न स्थानों पर आयोजित किया जाता है। इलाहाबाद (प्रयागराज), नासिक जिला (नासिक और त्र्यंबक), और उज्जैन। मुख्य त्योहार एक नही के किनारे स्थित है। कार्यक्रम के अंत में अंजनी कुमार सिन्हा ने विशेष रूप से स्पीकर, चेयरपर्सन, सम्मानित अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। जिन्होंने इस अवसर को प्राप्त किया और इस प्रयास को सफल बनाने में मदद की।

AAJ NEWSPAPER, RANCHI EDITION 20 FEB 2019

केंद्रीय पुस्तकालय में महाकुंभ की उत्पत्ति, महत्व और इतिहास पर विशेष व्याख्यान

सांस्कृतिक इतिहास हैं कुंभ मेले

रांची | प्रमुख संवाददाता

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची और रांची विश्वविद्यालय की ओर से मंगलवार को केंद्रीय पुस्तकालय के शहीद स्मृति सभागार में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसका विषय था- कुंभ का महत्व, उत्पत्ति और इतिहास। मुख्य वक्ता के रूप में रांची विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रो हरि शंकर पांडेय मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एसपी कॉलेज, दुमका के पूर्व प्राचार्य प्रो बीएन झा ने की।

प्रो हरि शंकर पांडेय ने महाकुंभ की उत्पत्ति, महत्व और इतिहास पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि भारत अपनी अति प्राचीन परंपराओं को भी जीवंत रूप इस कारण दे सका, क्योंकि उनमें विश्वसनीयता और वैज्ञानिकता के साथ वैदिक व पौराणिक कथाओं का व्यापक समर्थन है। उन्होंने कहा कि पूर्ण कुंभ, अर्द्ध कुंभ, महा कुंभ इन शब्दों से भारतीय जनता वैदिक काल से ही अवगत रही है। कलश का ही पर्यायवाची शब्द कुंभ है। उन्होंने बताया कि परंपरागत रूप से, चार मेलों को व्यापक रूप से कुंभ मेलों के रूप में पहचाना जाता है। इनमें- प्रयागराज कुंभ मेला, हरिद्वार कुंभ मेला, नासिक-त्र्यंबकेश्वर सिंहस्थ और उज्जैन सिंहस्थ हैं। मुख्य त्योहार स्थल नदी के किनारे स्थित है। हरिद्वार में गंगा, इलाहाबाद में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम, नासिक में गोदावरी और उज्जैन में शिप्रा नदी के किनारे कुंभ मेला आयोजित होता है। इन नदियों में स्नान करने से सभी पापों का निवारण होता है।

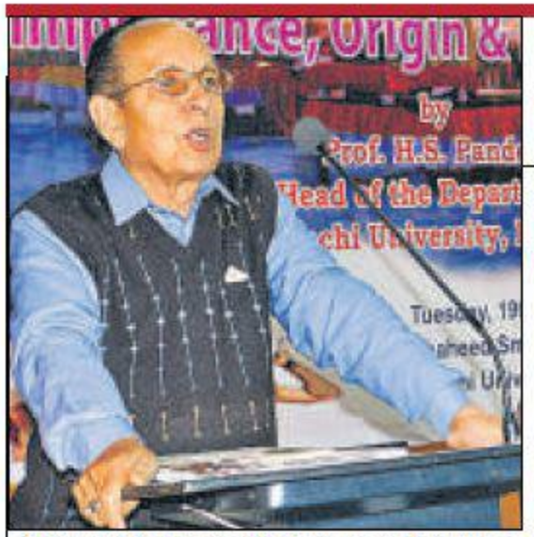

मंगलवार को केंद्रीय पुस्तकालय में आयोजित व्याख्यान में बोलते वक्ता।

- प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक-त्र्यंबकेश्वर और उज्जैन को ही कुंभ मेले के रूप में मिली है पहचान
- मान्यता है कि मुख्य त्योहार स्थल की नदियों में स्नान करने से सभी पापों का निवारण होता है

प्रो पांडेय ने कहा कि हिन्दू कथाओं का एक संघ भी प्रचलित है, जिसमें देवताओं ने राक्षसों से अमृत कलश लेने के बाद देवताओं में से एक ने अमृत की बूंदों को चार स्थानों के पास गिराया, जहां वर्तमान में कुंभ मेला लगता है। उन्होंने कहा कि कई स्थल कुंभ मेला का दावा करते हैं, इनमें से स्थलों को पारंपरिक रूप से कुंभ मेला- प्रयागराज, हरिद्वार, त्र्यंबक-नासिक और उज्जैन के रूप में मान्यता प्राप्त है।
व्याख्यान के बाद, एक प्रश्न और उत्तर सत्र आयोजित किया गया। इसमें प्रतिभागियों ने कुंभ के कुछ रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों के बारे में सवाल पूछे, जिनके जवाब उन्हें दिए गए। मौके पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा, अंजनी कुमार सिन्हा समेत बड़ी संख्या में बुद्धिजीवी और विद्यार्थी मौजूद थे।

तकनीक और प्रौद्योगिकी के साथ कदम मिला कर चलें

रांची | प्रमुख संवाददाता

बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बीआईटी), मेसरा के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग, की ओर मैकेनिकल इंजीनियरिंग में हालिया प्रगति विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन मंगलवार को हुआ।

सम्मेलन के लिए 70 से अधिक शोधपत्र पत्र प्राप्त हुए, जिसमें से 53 का चयन सबके मतों के आधार पर हुआ। समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि उच्च तकनीकी शिक्षक एवं कौशल विकास विभाग के सचिव राजेश कुमार शर्मा, मौजूद थे। कुलपति डॉ एमके मिश्रा ने प्रौद्योगिकी में पैसे खर्च करने पर जोर दिया, जिससे देश की प्रगति हो सके। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए शोध पत्र एक संपादित किताब का हिस्सा बनेंगे, जो अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक की ओर से प्रकाशित की जाएगी। राजेश कुमार शर्मा ने विद्यार्थियों को नई तकनीकों और प्रौद्योगिकियों के साथ कदम मिला कर चलने की सलाह दी। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिए गए। मौके पर झारखंड तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ गोपाल पाठक, गया इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य डॉ निर्मल कुमार, डॉ प्रभास कुमार, डॉ पीपी चट्टोपाध्याय, निफ्फ्ट के निदेशक डॉ एस सिंह, बीआईटी सिंदरी के पूर्व निदेशक डॉ एसएन प्रसाद आदि मौजूद थे।

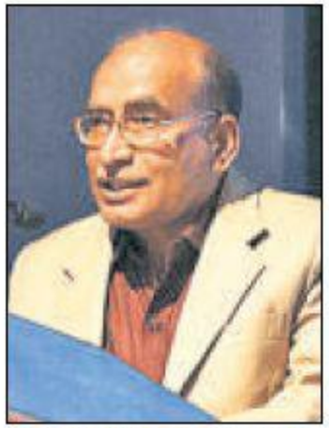
मंगलवार को बीआईटी मेसरा के राष्ट्रीय सम्मेलन में विचार रखते वक्ता।

हिन्दुस्तान ई-मेल : jobsear
जॉब्स/एडमिशन/स्कॉलर

इंडियन ऑयल में 466 प

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड ने ट्रेड और टेकि
466 पदों पर भर्तियां करने के लिए आवेदन मांगे हैं।
बरौनी, गुजरात, मथुरा, पानीपत, डिगबोई, बोंगाईगांव
के लिए होंगी। पदों को एक से दो वर्ष के अनुबंध के
-ट्रेड/टेक्निशियन अप्रेंटिस, कुल पद : 466
योग्यता : दसवीं/आईटीआई/डिप्लोमा (इंजीनियरिंग
संबंधित विषय में बैचलर डिग्री प्राप्त होनी चाहिए।
आयु सीमा : न्यूनतम 18 वर्ष और अधिकतम 24
फरवरी 2019 के अनुसार की जाएगी।
आवेदन शुल्क : इन पदों पर आवेदन करने के लिए
चयन प्रक्रिया : योग्य उम्मीदवारों का चयन लिखि
किया जाएगा।

ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि: 23 मार्च 2
वेबसाइट : www.iocl.com

टेक्निशियन समेत 10 पदों पर नियुक्तियां

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च, हैदराबाद ने दस पदों के लिए आवेदन पत्र मांगे हैं। इसके तहत टेक्निशियन, असिस्टेंट और एलडीसी के पदों पर नियुक्तियां की जाएंगी।
योग्यता : पदों के अनुसार दसवीं/बारहवीं अथवा ग्रेजुएशन किया हो।

बीएचयू में लिए आवे

बनारस हिन्दू
सपोर्ट स्टाफ
के लिए आवे
क्लीनर, वार्ड
गार्ड के पद श
योग्यता : आ
ही किसी अस

Lecture on history of Kumbh Mela at IGNCA

PNS ■ RANCHI

Indira Gandhi National Center for the Arts (IGNCA), Regional Centre, Ranchi (RCR) organised a lecture on the topic 'The Importance, Origin and History of Kumbh' on Tuesday. The speaker for the occasion was Professor HS Pandey, eminent scholar and former Head of the Department, Department of History, Ranchi University. The lecture was chaired by Professor BN Jha 'Bidit' an academician and former principal SP Collage Doranda.

Dr Ajay Kumar Mishra, Regional Director IGNCA, RCR welcomed the chairperson, speaker, distinguished guests and the participants. Addressing the gathering he spoke about Kumbh Mela being a mass Hindu pilgrimage in which they gather to bathe in a holy river.

In his lecture Professor Pandey spoke intensively about the origin, importance and history of the Maha Kumbh. He said that India could give its ancient traditions life because of its reliability, scientific nature, message of comprehensive support of Vedic and mythological stories and eternal achievement. "Since the Vedic period, the Indian people have been aware of the terms like Purna Kumbh, Ardha Kumbh and Maha Kumbh. The word synonym of Kumbh is Kalash. Traditionally, four fairs are widely recognized as the Kumbh Melas: the Prayagraj Kumbh Mela, Haridwar Kumbh Mela, the Nasik-Trimbakeshwar Simhastha, and Ujjain Simhastha.

These four fairs are held periodically at one of the following places by rotation- Allahabad (Prayagraj), Haridwar, Nasik district (Nasik and Trimbak), and Ujjain. The main festival site is located on the banks of a river- the Ganges at Haridwar, the confluence of the Ganges, Yamuna and the invisible Sarasvati at Allahabad, the Godavari at Nashik and the Shipra at Ujjain. Bathing in these rivers is thought to cleanse a person of all their sins at the Kumbh Mela which is held every 12 years," he said.

"The association of Hindu legend in which the gods and demons fought over a pot, or "kumbh," of nectar that would give them immortality is also prevalent. A later day addition to the legend which says that after taking the pot one of the gods spilled drops of nectar near four places where Kumbha Mela is presently held. The place is also Titha Raj due to the confluence of the three rivers. Numerous sites and fairs lay claim to be the Kumbh Melas, among these the four sites are most recognised," he added.

A question and answer followed the talk where the guests enquired about certain customs and rituals of the Kumbh. Through the session the participants gained knowledge about the rich heritage of the Hindu religion and expressed their pleasure on becoming a part of the same.

Towards the end of the programme, Anjani Kumar Sinha, IGNCA, RCR thanked the speaker, chairperson and the guests present for gracing the occasion and making it a success.

Prof. HS Pandey delivered speech on the topic 'The Importance, Origin and History of Kumbh' organised by Indira Gandhi National Center for the Arts (IGNCA) Regional Centre in Ranchi on Tuesday Ratan Lal | Pioneer

Pioneer Ranchi Edition 20 Feb 2019

केंद्रीय पुस्तकालय. कुंभ के महत्व, उत्पत्ति और इतिहास पर व्याख्यान

भारत की प्राचीन परंपराओं में है विश्वसनीयता और वैज्ञानिकता

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची एवं रांची विवि के तत्वावधान में शहीद स्मृति सभागार, केंद्रीय पुस्तकालय, रांची विश्वविद्यालय में 'कुंभ के महत्व, उत्पत्ति और इतिहास' विषय पर व्याख्यान हुआ. रांची विवि के इतिहास विभाग के पूर्व एचओडी प्रो एचएस पांडेय सत्र के वक्ता थे. व्याख्यान की अध्यक्षता एसपी कॉलेज दुमका के पूर्व प्राचार्य प्रो बीएन झा 'बिदित' ने की. इन दोनों को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची के निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने सम्मानित किया. डॉ मिश्रा ने कहा कि कुंभ मेला आस्था का एक व्यापक तीर्थ है. हिंदू पवित्र नदी में स्नान करने के लिए एकत्रित होते हैं. अनुमानित 120 मिलियन लोग हर साल कुंभ का दौरा करते हैं.

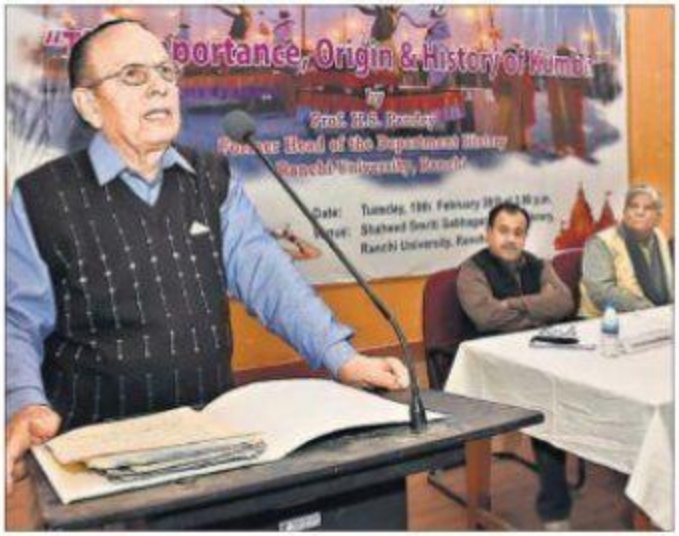

'कुंभ के महत्व, उत्पत्ति और इतिहास' विषय पर आयोजित व्याख्यान में शामिल विशेषज्ञ.

प्रतिभागियों को मिली अहम जानकारी प्रो एचएस पांडेय ने महाकुंभ की उत्पत्ति, महत्व और इतिहास के बारे में प्रतिभागियों को शिक्षित किया. उन्होंने जानकारी दी के भारत अपनी अति प्राचीन परंपराओं को भी जीवंत रूप इस कारण दे सका क्योंकि उसमें विश्वसनीयता है. वैज्ञानिकता है. वैदिक एवं पौराणिक कथाओं का व्यापक समर्थन एवं अनंत फल ही प्राप्ति का संदेश है. पूर्ण कुंभ, अर्ध कुंभ, महा कुंभ इन शब्दों से भारतीय जनता वैदिक काल से ही अवगत रही है. इस सत्र में प्रतिभागियों ने हिंदू धर्म के सबसे अमीर तीर्थ और विरासत में से एक के बारे में ज्ञान प्राप्त किया. विद्यार्थियों ने कहा कि यहां भारत की संस्कृति के बारे में काफी कुछ सीखने को मिला. इस मौके पर अंजनी कुमार सिन्हा आदि मौजूद थे. .

सनसनी नहीं, सटीक खबर
SANMARG Live
sanmarglive.com
www.sanmarglive.com
LIVE TV
सनसनी नहीं, सटीक खबर
9748799999
LIVE NEWS
HINDI URDU ENGLISH
MORNING INDIA
An English Daily
पूर्वी भारत का सबसे लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
सन्मार्ग
• Patna • Ranchi
अवामी न्यूज़ Urdu Daily News Paper
عوامی نیوز
Follow on us
YouTube

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा राँची में'कुंभ के महत्व पर चर्चा

Facebook Twitter WhatsApp LinkedIn

रांची : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची एवं राँची विश्वविद्यालय के तत्वाधान में 19 फरवरी, 2019 को शहीद स्मृति सभागार, केंद्रीय पुस्तकालयरांची विश्वविद्यालय, रांची में अपराह्न 3 बजे 'कुंभ के महत्व, उत्पत्ति और इतिहास' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया । प्रो. एच.एस. पांडे, प्रख्यात विद्वान और इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, रांची विश्वविद्यालय सत्र के वक्ता थे। व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो. बी.एन. झा 'बिदित', शिक्षाविद और पूर्व प्राचार्य, एस.पी. कॉलेज, दुमका ने किया ।

Search here...

Search ...

Search

LIVE TV Courtesy : AAJ TAK

Aaj Tak LIVE TV
00:00 12:43:25

LIVE TV Courtesy : NEWS 18 BIHAR JHARKHAND

00:00 00:00

बिहार

बिहार (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%b0%e0%a4%be%e
रोहतास (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%b0%e0%a4%be%e

बबुनी के शादी नाटक का मंचन (https://sanmarglive.com/natak-rohtas/4570

रोहतास के दिनारा प्रखंड अंतर्गत बलियां पंचायत के को
नाटक बबुनी की शादी" का मंचन हुआ.जिसमें बेटी-बचा
जोर देते...

प्रारंभ में, प्रो. पांडे और प्रो. झा को डॉ. अजय कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय निदेशक, IGNCA, RCR द्वारा सम्मानित किया गया। डॉ. मिश्रा ने अपने भाषण में व्याख्यान के अध्यक्ष, वक्ता, प्रतिष्ठित मेहमानों और उन सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया जो व्याख्यान का हिस्सा थे। उन्होंने संक्षेप में कुंभ मेले को आस्था का एक व्यापक हिंदू तीर्थ होने के बारे में बताया जिसमें हिंदू पवित्र नदी में स्नान करने के लिए एकत्रित होते हैं। अनुमानित 120 मिलियन लोग हर साल कुंभ का दौरा करते हैं। डॉ. मिश्रा ने अध्यक्ष प्रो.बी.एन. झा 'बिदित' और अध्यक्ष, प्रो. एच.एस. पांडे का परिचय दिया |

प्रो. हरी शंकर पाण्डेय, पूर्व विभागाध्यक्ष , इतिहास विभाग , रांची विश्वविद्यालय, राँची में कार्यरत रह चुके है , प्रो. पाण्डेय इतिहास के प्रख्यात विद्वान है और इस क्षेत्र के जाने माने हस्ती हैं | प्रो. पाण्डेय केवल झारखण्ड में ही नहीं बल्कि भारत के विभिन्न क्षेत्रो के ऐतिहासिक घरोहर के बारे में अध्ययन किया है और उसके बारे शोध के माध्यम से विभिन्न प्रतियों में प्रकाशित किया है |

व्याख्यान सत्र में, प्रो. पांडेय ने महाकुंभ की उत्पत्ति, महत्व और इतिहास के बारे में प्रतिभागियों को गहनता से शिक्षित किया। उन्होंने जानकारी दी के भारत अपनी अति प्राचीन परम्पराओं को भी जीवन्त रूप इस कारण दे सका क्योंकि उसमें विस्वसनीयता है, वैज्ञानिकता है, वैदिक एवं पौराणिक कथाओं का व्यापक समर्थन एवं अनन्त फल ही प्राप्ति का सन्देश है। पूर्ण कुम्भ, अर्ध कुम्भ, महा कुम्भ इन शब्दों से भारतीय जनता वैदिक काल से ही अवगत रही है। कलश का ही पर्यायवाची शब्द कुम्भ है। अमृत कलश की जगह अमृत कुम्भ समाज में अत्यधिक प्रचलित रहा होगा इसलिए कुम्भ महापर्व की अवधारण आज भी यथावत है। परंपरागत रूप से, चार मेलों को व्यापक रूप से कुंभ मेलों के रूप में पहचाना जाता है: प्रयागराज कुंभ मेला, हरिद्वार कुंभ मेला, नासिक-त्र्यंबकेश्वर सिंहस्थ, और उज्जैन सिंहस्थ। इन चार मेलों को समय-समय पर निम्न स्थानों में आयोजित किया जाता है: इलाहाबाद (प्रयागराज), हरिद्वार, नासिक जिला (नासिक और त्र्यंबक), और उज्जैन । मुख्य त्योहार स्थल एक नदी के किनारे स्थित है: हरिद्वार में गंगा (गंगा); इलाहाबाद में गंगा और यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम (संगम); नासिक में गोदावरी; और उज्जैन में शिप्रा। इन नदियों में स्नान करने से उनके सभी पापों का निवारण होता है।

झारखंड

Breaking News (https://sanmarglive.com/category/breaking/)
अन्य (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%96%e0%a5%87%e
खेल (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%96%e0%a5%8
झारखंड (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%9d%e0%a4%be%e

राष्ट्रीय यूथ एथलेटिक्स में आदित्य प्रकाश क सांगा को रजत (https://sanmarglive.com/atl ranchi/45501/)

रांची : एथलेटिक्स फेडरेशन आफ इंडिया,नई दिल्ली द्वार के स्वामी विवेकानंद स्टेडियम में 19 से 21 फरवरी तक अ

देश-दुनिया

Breaking News (https://sanmarglive.com/category/breaking/)
दिल्ली
देश - दुनिया (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%a6%e

दक्षिण कोरिया के साथ संबंध और मजबूत प्रतिबद्ध : मोदी (https://sanmarglive.com/pr

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दक्षिण कोरिया को हुये बुधवार को कहा कि भारत उसके साथ अपने संबंधों

व्यापार

झारखंड (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%9d%e0%a4%be%e
बोकारो (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%9d%e0%a4%be%e
व्यापार (https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%b5%e0%a5%8d%e

भारी वाहन मालिकों को देना होगा अब एक (https://sanmarglive.com/jha-10/44826/)

बोकारो : झारखंड सरकार ने गत एक फरवरी से वाहनों बदलाव किया है. नये टैक्स स्लैब के अनुसार, अब भारी...

मनोरंजन

हिंदू कथाओं का एक संघ भी प्रचलित है, जिसमें देवताओं और राक्षसों ने एक अमृत का "कुंभ", जो उन्हें अमरता प्रदान करता है। किंवदंती के बाद के एक दिन के अलावा, जिसमें कहा गया है कि बर्तन लेने के बाद देवताओं में से एक ने अमृत की बूंदों को चार स्थानों के पास गिराया, जहां वर्तमान में कुंभ मेला लगता है। तीन नदियों के संगम के कारण यह स्थान तित राज भी है। कई स्थल और मेले कुंभ मेले होने का दावा करते हैं, इनमें से निम्नलिखित चार स्थलों को पारंपरिक रूप से कुंभ मेला: इलाहाबाद, हरिद्वार, त्र्यंबक-नाशिक और उज्जैन के रूप में मान्यता प्राप्त है।

व्याख्यान के बाद, एक प्रश्न और उत्तर सत्र आयोजित किया गया, जहां मेहमानों और प्रतिभागियों ने कुंभ के कुछ रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों के बारे में आगे पूछताछ की, जिसके बारे में वे अनजान थे। इस जानकारीपूर्ण व्याख्यान सत्र के माध्यम से, प्रतिभागियों ने हिंदू धर्म के सबसे अमीर तीर्थ और विरासत में से एक के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने इस सत्र का हिस्सा बनने के लिए अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त की क्योंकि भारत की संस्कृति के बारे में सीखना आवश्यक है जो कि प्राचीन काल से प्रचलित है। कार्यक्रम के अंत में, श्री अंजनी कुमार सिन्हा, IGNCA, RCR ने विशेष रूप से स्पीकर, चेयरपर्सन, सम्मानित अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस अवसर को प्राप्त किया और इस प्रयास को सफल बनाने में मदद की।

(http://patna.shemford.com)

(https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%ae%e0%a4%a8%e
हॉलीवुड
(https://sanmarglive.com/category/%e0%a4%b9%e0%a5%89%e

इंटरनेशनल डिजाइनर कार्ल लजेरफेल्ड क
(https://sanmarglive.com/hollywood-43/452

इंटरनेशनल डिजाइनर कार्ल लजेरफेल्ड का 85 साल की है। खबरों की मानें तो कार्ल करीब दो हफ्तों से बीमार चल

NEWS DATE WISE

M
4 (https://sanmarglive.com/date/2019/02/04/)
11 (https://sanmarglive.com/date/2019/02/11/)
18 (https://sanmarglive.com/date/2019/02/18/)
25

« JAN (HTTPS://SANMARGLIVE.COM/DATE/2019/(

JOIN US ON SOCIAL

(https://www.facebook.com/sanmarglive)

(https://www.instagram.com/sanmarglive)

(https://www.linkedin.com/in/sanmarglive)

(https://twitter.com/sanmarglive)